प्रातःक्लास 14/7/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्तिः मीठे–मीठे रूहानी बच्चे यह तो समझ गये हैं कि एक तरफ है भक्ति और दूसरी तरफ है ज्ञान। भक्ति तो अथाह है और अथाह भक्ति सिखलाने वाले हैं। शास्त्र भी सिखलाते हैं, मनुष्य भी सिखलाते हैं। यहाँ न कोई शास्त्र है, न कोई मनुष्य है। यह सिखलाने वाला है ही एक रूहानी बाप जो आत्माओं को बैठ समझाते हैं। आत्मा ही धारण करती है। परमपिता में भी यह सारा ज्ञान है, 84 के चक्र का उसमें नॉलेज है। इसलिए उनको भी स्वदर्शनचक्रधारी कह सकते हैं। बच्चों को भी स्वदर्शनचक्रधारी बना रहे हैं। बाबा भी ब्रह्मा के तन में इसलिए उनको ब्राह्मण भी कहा जाता है। हम भी उनके बच्चे ब्राह्मण हैं। यह भी जानते हो ब्राह्मण से फिर देवता बनते हैं। अभी बाप बैठ याद की यात्रा सिखलाते हैं। इसमें कोई हठयोग आदि की बात नहीं है। वह लोग हठयोग आदि से ट्रान्स में जाते हैं। यहाँ वह बात है नहीं। ट्रान्स कोई काम की नहीं। कब भी किसको ऐसे नहीं कहना होता है कि हम ट्रान्स में जाते हैं। यह कोई बड़ाई नहीं, घाटा है। ट्रान्स की बड़ाई कब है नहीं। कुछ भी नहीं है। ट्रान्स तो एक पाई पैसे का खेल है। कब भी ऐसे किसको नहीं कहना है हम भी ट्रान्स में जाते हैं; क्योंकि आजकल विलायत आदि में भी जहाँ–तहाँ ढेर के ढेर ट्रान्स में जाते हैं। ट्रान्स में जाने से न कोई फायदा है उनको, न फायदा है तुमको। बाबा ने समझा दिया है ट्रान्स में न याद की यात्रा है, न ज्ञान है। ध्यान अथवा ट्रान्स वाला कब कुछ भी ज्ञान नहीं सुनेगा। न कोई पाप भस्म होंगे। ट्रान्स का महत्व कुछ भी है नहीं। ट्रान्स दिखलाने लिए कोई कहना भी भूल है। बाबा के पास समाचार तो आते हैं ना। कोई ने कहा हमने सुना है आप ट्रान्स में जाते हो, वह दिखाओ। तो उनको ले गये। बाबा कहते हैं ट्रान्स तो बिल्कुल वर्थ नॉट अपेनी है। बच्चे भोग लगाते हैं उनको कोई ट्रान्स नहीं कहा जाता। ट्रान्स भक्तिमार्ग, हठयोग आदि में है। ट्रान्स का महत्व कुछ भी है नहीं। न दिखाने की दरकार नहीं है। बोलो यहाँ ट्रान्स है नहीं। बाप सिर्फ कहते हैं मामेकम् याद करो। अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो। बस। याद को ट्रान्स नहीं कहा जाता। याद से ही विकर्म विनाश होते हैं। ट्रान्स में विकर्म विनाश नहीं होंगे। बाबा के पास समाचार आते हैं। हठयोगियों को बुलाकर ट्रान्स दिखाते हैं। बाबा सावधान करते हैं, वॉरनिंग देते हैं कब भी कोई सन्यास मठ के बड़ों को; क्योंकि मठ–पंथ तो बहुत है ना, कब भी किसको निमंत्रण देने की दरकार नहीं है; क्योंकि वह अपने धर्म के ही नहीं हैं। उनको इस समय कुछ भी फायदा होने का नहीं है। वह इस समय बहुत मगरूर हैं। इन सन्यासियों आदि को ज्ञान तब मिलना है जब विनाश का समय होता है। तुम जानते हो यह अपने धर्म के तो है नहीं। भल निमंत्रण देते रहो; परन्तु कोई आशा मत रखो। यह ज्ञान कल्ट में जल्दी नहीं आवेंगे। जब विनाश सामने देखेंगे तब आवेंगे। समझेंगे अभी तो मौत आया कि आया। फिर तुम जो कहेंगे वह मानेंगे। तुम कहते रहते हो 8 वर्ष में विनाश आया कि आया। जब नज़दीक देखेंगे तब मानेंगे। मौत आना है। तुम तो बहुत समय से कहते आते हो। अभी तो समझते हैं इन्हों के यह गपोड़ें हैं। जैसे तुम भक्ति को गपोड़ा समझते हो वैसे वह तुम्हारे ज्ञान को भी गपोड़ा समझते हैं। तुम्हारा झाड़ धीरे2 बढ़ना है। सन्यासी कोई इस आने का नहीं है। उनको भी सिर्फ यह कहना है कि बाप को याद करो। यह भी बाप ने समझाया है तुमको आँखें बन्द नहीं करनी हैं। आँख आँख में मिलाना है। आँखें बन्द होंगी तो बाप को कैसे देखेंगे। हम आत्मा हैं। परमपिता परमात्मा के सामने बैठे हैं। देखने में तो नहीं आता है। यह ज्ञान बुद्धि में है। ट्रान्स को कोई ज्ञान नहीं कहा जाता। तुम बच्चे बैठे हो समझते हो परमपिता परमात्मा हमको पढ़ा रहे हैं इस शरीर के आधार से। ध्यान आदि की कोई बात ही नहीं। ध्यान में जाना कोई बड़ी बात नहीं है। यह भोग आदि की ड्रामा में नूँध है। सर्वेन्ट बन भोग लगाकर आते हैं। जैसे सर्वेन्ट लोग बड़े आदमी को खिलाते हैं, तुम भी सर्वेन्ट हो। देवताओं को भोग लगाने जाते हो। वह है फरिश्ते। वहाँ मम्मा–बाबा को देखते हैं। वह भी एमऑबजेक्ट है। इनको

इनको ऐसा फरिश्ता बनना है। बाकी ध्यान में जाना कोई बड़ी बात नहीं। जैसे यहाँ शिवबाबा तुमको पढ़ाते हैं वैसे वहाँ भी शिवबाबा उन द्वारा कुछ समझावेंगे। सूक्ष्मवतन में क्या होता है यह सिर्फ जानना होता है। बाकी ट्रान्स आदि की कोई महत्व नहीं। कोई को ट्रान्स आदि दिखाना यह बचपन, बेबीपना है। बाबा सभी को सावधान करते हैं ट्रान्स में मत जाओ। यह तो पढ़ाई है। कल्प2 बाप आकर पढ़ाते हैं। अभी है संगमयुग। तुमको जरूर ट्रान्सफर होना है। ड्रामा के प्लैन अनुसार तुम पार्ट बजा रहे हो। पार्ट की महिमा है। बाप आकर तुम बच्चों को पढ़ाते हैं। ड्रामा अनुसार तुमको बाप से एक बार पढ़कर देवता जरूर बनना है। इसमें बच्चों को तो खुशी होती है। हम बाप को भी और रचना के आदि, मध्य, अन्त को भी जान गये हैं। बाप की शिक्षा पाकर बहुत हर्षित होना चाहिए। और तुम पढ़ते ही हो नई दुनिया के लिए। वहाँ है ही देवी–देवताओं का राज्य। तो जरूर पुरुषोत्तम युग पर पढ़ना होता है। तुम इस दुख से छूटकर सुख में जाते हो। यहाँ तो तमोप्रधान होने कारण तुम बीमार, रोगी आदि होते हो। यह सभी रोग मिट जानी है। मुख्य है ही पढ़ाई। उनसे ट्रान्स आदि का कनेक्शन नहीं। यह बड़ी बात नहीं। बहुत जगह ऐसे ध्यान में चले जाते हैं फिर मम्मा आती है बाबा आता है। यह कुछ भी है नहीं। बाप तो एक ही बात समझाते हैं। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो। तुम जो आधा कल्प देहअभिमानी बन पड़े हो अभी देहीअभिमानी बन बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हों। इसको याद की यात्रा कहा जाता। योग कहने से यात्रा सिद्ध नहीं होता है। तुम आत्माओं को यहाँ से जाना है। बहुत सतोप्रधान बनकर जाना है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। तुम ट्रायल करते हो। उन्हों का जो योग है उसमें ट्रायल की बात नहीं। हठयोगी तो ढेर हैं। वह है ही हठयोग। यहाँ है बाप को याद करना। बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों अपन को आत्मा समझो। ऐसे और कोई कब नहीं समझावेंगे। ट्रान्स आदि की बात जो दुनिया में है वह यहाँ नहीं। और ही तुम पर हंसी उड़ावेंगे; क्योंकि वह इस याद की यात्रा को जानते ही नहीं हैं। भोग लगाकर आते हैं यह ड्रामा में नूँध है। इनका महत्व कुछ नवधा भक्ति में भी ध्यान में जाते हैं, जिसकी भक्ति करते हैं वह चित्र आ जाते हैं। कोई बड़ी बात नहीं। इससे फायदा कुछ नहीं। यह तो पढ़ाई है। बाप का बच्चा बना फिर बाप से पढ़ना और पढ़ाना है। कोई को बुलाना न है। बाबा कहते हैं तुम म्युजियम खोलो। आपे ही तुम्हारे पास आवेंगे। बुलाने की तकलीफ नहीं होगी। कहेंगे यह ज्ञान तो बहुत अच्छा है। कब सुना नहीं है। इसमें तो करैक्टर्स सुधरते हैं। मुख्य है ही पवित्रता। जिस पर ही हंगामे होते हैं। बहुत फेलियर्स भी होते हैं। तुम्हारी अवस्था ऐसी हो जानी है इस दुनिया में होते हुए इनको देखते नहीं हैं। आत्मा तो चली जावेगी अपने शान्तिधाम। घर–गृहस्थ में रहते हुए, खाते–पीते तुम्हारी बुद्धि उस तरफ हो। जैसे बाप नया मकान बनाते हैं तो सभी की बुद्धि नये मकान तरफ चली जाती है। अभी नई दुनिया(स्वर्ग) बन रही है। बेहद का बाप बेहद का घर बना रहे हैं। हम स्वर्गवासी थे फिर चक्र लगाया है। अभी चक्र पूरा हुआ। अभी तुमको स्वर्ग में जाना है। तो उसके लिए पावन भी जरूर बनना है। याद की यात्रा से पावन बनना है। याद में ही विघ्न पड़ती है। इसमें ही तुम्हारी लड़ाई है। पढ़ाई में लड़ाई की बात नहीं। पढ़ाई तो बिल्कुल सहज है। 84 के चक्र का नालेज तो बहुत ..... है। बाकी अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो इसमें है मेहनत। यह भूलने से विकर्म बन जाते हैं। बाप कहते हैं यह याद की यात्रा भूलो मत। कम से कम आठ घंटा तो जरूर याद करो। शरीर निर्वाह लिए कर्म भी करना है। नींद भी करनी है। सहज मार्ग है ना। अगर कहीं नींद न करो। यह तो हठयोग हो गया। हठयोगी तो बहुत ही हैं। बाप कहते हैं उस तरफ कुछ भी न देखो। इससे कुछ फायदा नहीं। कितने हठयोग सिखलाते हैं। यह सभी है मनुष्य मत। तुम आत्माएँ हो परमपिता परमात्मा के मत पर। आत्मा ही शरीर ले पार्ट बजाती है ना। डा0 बनते हैं, फलाना बनते हैं; परन्तु मनुष्य देहअभिमानी बन पड़े हैं मैं फ्लाना हूँ..... अभी तुम्हारी बुद्धि में है हम आत्मा हैं। बाप भी आत्मा है। इस समय तुम आत्माओं की(को) कोई आत्मा नहीं पढ़ती(पढ़ाती)

लेकिन परमपिता परमात्मा पढ़ाते हैं। इसलिए गायन भी है आत्माएँ परमात्मा अलग रहे..... कल्प2 मिलते हैं। बाकी जो भी सारी दुनिया है वह सभी देह अभिमान में आकर, देह समझ कर ही पढ़ाते हैं। बाप कहते हैं मैं आत्माओं को पढ़ाता हूँ। जज, बैरीस्टर आदि भी आत्मा बनती है। तुमको पढ़ाने वाला है परमात्मा। बाप कहते हैं तुम आत्मा सतोप्रधान पवित्र थे। फिर तुम पार्ट बजाते2 सभी पतित बन गये हो। अभी चिल्लाते हो बाबा आकर पावन बनाओ। बाप तो है ही पावन। यह बात कोई की बुद्धि में नहीं है। जब सुने तब धारणा हो। तुम बच्चों को धारणा होती है जो तुम देवता बनते हो। और कोई की बुद्धि में बैठेगा नहीं; क्योंकि यह है नई बात। यह है ज्ञान। वह है सारी भक्ति। तुमने भी भक्ति की है। तो तुम घड़ी2 देहअभिमानी बन जाते हो। अभी बाप कहते हैं बच्चे आत्मा अभिमानी बनो। अपन को आत्मा समझो। हम आत्माओं को बाप शरीर द्वारा पढ़ाते हैं। घड़ी2 यह याद रखो। यह एक ही समय है जब कि आत्माओं का बाप परमपिता परमात्मा पढ़ाते हैं। बाकी सारे ड्रामा में कब पार्ट है नहीं सिवाय इस संगमयुग के। इसलिए बाप बार2 फिर भी कहते हैं मीठे2 बच्चों अपन को आत्मा निश्चय करो और बाप को याद करो। यह बड़ी ऊँची यात्रा है। चढ़े तो चाखे वैकुण्ठ रस..... विकार में गिरने से एकदम चकनाचूर हो जाते हैं। फिर भी स्वर्ग में तो आवेंगे ना; परन्तु बहुत कम पद। यह राजधानी स्थापन हो रही है। इसमें कम पद वाले भी चाहिए ना। सभी थोड़े ही ज्ञान में उछलते हैं। फिर तो बाबा को बहुत बच्चियाँ मिलनी चाहिए। अगर मिलती भी हैं तो थोड़े टाइम के लिए। वास्तव में तुम फिमेल तो नौकरी के बन्धन से मुक्त हो। मेल्स को नौकरी कर बच्चों की पालना करनी है। यह अभी रिवाज़ हुआ है, जो फिमेल्स भी नौकरी करती हैं। तुम बच्चों को तो फुर्सत है। आठ घंटा नौकरी पुरुषों को करनी है। तुम फ्री हो। इसलिए वन्देमात्रम् गाया हुआ है। जगदम्बा का कितना भारी मेला लगता है; क्योंकि बहुत सर्विस की है। जो बहुत सर्विस करते हैं वह बड़ा राजा बनते हैं। दिलवाला मंदिर में तुम्हारा ही यादगार है। तुम बच्चों को तो बहुत टाइम निकालना है। रोटी पकाई खलास। वह भी शुद्ध भोजन याद में बैठ बनाना चाहिए। जो किसको खिलावें तो उनका भी हृदय शुद्ध हो जाये। ऐसे बहुत थोड़े हैं। जिनको ऐसा भोजन मिलता होगा। अपने से पूछो हम शिवबाबा की याद में रह भोजन बनाते हैं। जो खाने से ही उनका हृदय पिघल जाये। घड़ी2 याद भूल जाते हैं। बाबा कहते हैं भूलेंगे; क्योंकि तुम अभी 16 कला तो बने नहीं हो। सम्पूर्ण बनना है जरूर। पूर्णमासी के दिन चन्द्रमा कितना तेज होता है। फिर कम होते2 जाकर लीक रह जाती है। घोर अंधियारा हो गया है। फिर घोर सोझरा होना है। यह विकार आदि छोड़ बाप को याद करते रहेंगे तो तुम्हारी आत्मा सम्पूर्ण बन जावेगी। तुम्हारी राजधानी स्थापन होती है। तुम चाहते हो सम्पूर्ण महाराजा बनने; परन्तु सभी तो बन न सके। पुरुषार्थ भी सब को कराना है। बाकी यह तो जानते हैं सभी राजाएँ सभी ल0ना0 तो नहीं बनेंगे। कोई तो कुछ भी पुरु0 नहीं करते। इसलिए महारथी घोड़ेसवार प्यादे कहा जाता है। महारथी थोड़े होते हैं। प्रजा वा लश्कर जितना होता है उतने कमान्डर वा मेजर थोड़े ही होंगे। कैप्टन भी हैं। प्यादे भी हैं। तुम्हारी सेना है ना। सारा मदार है याद की यात्रा पर। इन से बल मिलेगा। तुम हो गुप्त वारियर्स। बाप को याद करने से विकर्मों का जो किचड़ा है वह भस्म हो जाता है। बाप कहते हैं धंधा–धोरी भी भल करो। बाप को याद करो। तुम जन्म–जन्मा0 के आशुक हो एक माशुक के। वह माशुक मिला है तो उनको याद करना चाहिए ना। आगे भी याद करते थे; परन्तु विकर्म थोड़े ही विनाश होते थे। जानते ही नहीं थे। बाबा को याद करने से विकर्म विनाश होंगे। बाबा ने बताया है तुमको यहाँ तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। आत्मा को ही बनना है। आत्मा ही मेहनत कर रही है। यह है तुम्हारी अन्तिम जन्म जिसमें जन्म–जन्मा0 के मैल को उतारना है। यह है ही मृत्युलोक का अन्तिम जन्म। फिर जाना है अमरलोक। आत्मा पावन बनने बिगर जा नहीं सकती। हिसाब–किताब सब चुक्तू होना है। सजा खावेंगे तो पद कम। सजा नहीं खाने वाले आठ माला के दाने कहे जाते हैं। 9 रत्न की ही मंडी आदि हर चीज़ बनाते हैं।

ऐसा बनना है तो बाप को याद करने की मेहनत करनी है। बाप कहते स्वर्ग में तो सभी जावेंगे। प्रजा तो ढेर के ढेर होती है ना। पुरुषार्थ करना है ऊँच पद पाने का। तो फिर कल्प–कल्पान्तर, जन्म–जन्मान्तर पाते रहेंगे। बाप तो हरेक की अवस्था से समझ सकते हैं। यह इतना चढ़ सकेंगे या नहीं। बाबा जानते हैं कई बच्चे बहुत अच्छी सर्विस करते हैं, अनुभव अच्छा सुनाते हैं। बाप कहते हैं सर्विस का सबूत दो। किसको समझाया। कोई आशुक हुआ? लिखते हैं फलाना रोज आते थे अभी आते नहीं हैं तो बात ही खलास। बाप को क्या बैठ लिखें। बाप को समाचार भी युक्तियुक्त सच्चा देना चाहिए। महिमा तो लिखें। फिर नहीं आता तो क्या लिखें। बाबा को शक पड़ेगा कोई ऐसी संशय की बात सामने आई जो टूट पड़ा। समाचार से यह बाबा, शिवबाबा भी जानते हैं यह बच्चा बहुत अच्छा सर्विस करते हैं। जैसे जगदीश है, रमेश है, चिरजींवी लाल(ग्वालियर का) है बहुत अच्छी सर्विस करते हैं। नशा चढ़ा हुआ है। जब अनुभव सुनाते हैं उनसे भी तुम समझ जावेंगे इनका अनुभव बहुत अच्छा है। इनका वाजिव(साधारण) है। मालूम पड़ता है ज्ञान तो मिला; परन्तु नशा कितना चढ़ा हुआ है। कितने को हमने ज्ञान दिया। लिखते हैं आज फलाना मिनिस्टर आया। बहुत अच्छा समझा। बाबा कहते हैं उस समय समझा। बाहर निकला और खलास हो जाता। माया एकदम क्या हाल कर देती है। बाबा को बहुत आकर कहते हैं बाबा हमने अच्छी रीत समझ लिया अभी हम यह काम–काज उतारकर आवेंगे। बाबा कह देते हैं माया ऐसी है जो तुम फिर आवेंगे ही नहीं। माया हप कर देती है। फिर वह नशा ही खलास हो जाता है। लिखकर देते हैं बहुत अच्छा ज्ञान है। अच्छी उन्नति हो सकती है; परन्तु खुद गुम। तो दूसरे फिर कैसे आवेंगे। खुद जाकर दूसरे को सुनावे तो तब तो आवे। इसलिए टाइम लग जाता है। वह भी नथिंग न्यु। जो कुछ होता है कल्प पहले मिसल चलता रहता है। ड्रामा अनुसार ब्राह्मणों का कुल वृद्धि को पाता रहता है। समझा जाता है इतने ढेर बच्चे आते हैं बाप से मिलने उन्हों के रहने लिए मकान आदि भी इतना बड़ा चाहिए। बाप कहते हैं मैं इस रथ पर आता हूँ। उन्हों ने फिर घोड़े–गाड़ी बैठ दिखाई है। बाकी लड़ाई आदि की बात ही नहीं। बाकी यह तो जानते हो पुरानी दुनिया का विनाश होगा फिर वहाँ सभी कुछ नया मिलेगा। फसल आदि सभी नया होगा। हर चीज़ फल–फूल, खान–पान सभी कुछ नया। तुम भी नये होंगे। आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान बनती है। यह ल0ना0 ने राज्य कैसे और किससे लिया किसको भी पता नहीं। तुम अभी जानते हो बाप ने पढ़ाया है। और कोई की ताकत नहीं। यह जब सतयुग के मालिक थे तो और कोई धर्म नहीं था। भारत में एक ही डिटी डिनायस्टी का राज्य था। यह बातें सिवाय बाप के कोई समझा न सके। उन्होंने राज्य कैसे पाया और फिर कैसे गंवाया यह बाप के सिवाय दुनिया में कोई भी नहीं जानते। तुम बतावेंगे तो मनुष्य जरूर वन्डर खावेंगे। और तो कोई बता न सके। 84 के चक्र का राज़ तुम समझाते हो। सतयुग को कहा है शिवालय। पवित्र दुनिया। कलियुग को कहा जाता है वैश्यालय नर्क। अपवित्र दुनिया। यह भी नहीं समझते हो तो जंगली जनावर कहेंगे ना। इसलिए ही बाबा ने पर्चे निकलवाई थी। सतयुगी रहवासी हो या कलियुगी नर्कवासी हो? तो शर्म आवेगा। नर्कवासी तो सभी हैं। अभी तुम बच्चे संगमयुग वासी हो। तुम जानते हो हम स्वर्ग वासी बन रहे हैं। तुम बच्चों को संग भी ऐसा करना चाहिए। संग तारे कुसंग बोरे। ऐसे भी बहुत हैं जो औरों को बचाते, खुद डूब पड़ते हैं भक्तिमार्ग के दूबण में। दूसरे को निकालते खुद ही नाम–रूप में फंस गटर में गिर पड़ते हैं। इसलिए बाबा खबरदार करते हैं। कहाँ नाम रूप में नहीं फंस मरना। बाबा जानते हैं अच्छे2 भी नामरूप में फंस पड़ते हैं। बॉकसिंग है ना। माया जोर से ऐसा थप्पर लगाती है जो फां कर देती। बाबा नाम नहीं ले सकते। फिर बहुत पछतावेंगे कि यह क्या किया। जो महसूस करते हैं वह फिर लिखते हैं अब बाबा हम कहाँ जावेंगे। रहम करो। और तो कोई जगह है नहीं। माया बड़ी जबरदस्त है। एकदम चुहयरा, मेहतर, भंगी बना देती है। यह है ही मेहतरों का राज्य। इसलिए बाप कहते हैं अमृत छोड़ विख क्यों खाते हो? विख को भार भी कहते हैं। फिर यह ल0ना0 को सतयुग में बच्चे नहीं होते। नहीं तो दुनिया कैसे चलेगी। अभी ऐसे पतित मनुष्यों को पावन देवता बनाता हूँ। अच्छा गुडमार्निंग।